डॉ.मीना खाडिलकर
हिन्दी विभागाध्यक्षा,
श्रीमती सी.बी.शाह
महिला महाविद्यालय,
सांगली ।

प्रमाणपत्र

मैं यह प्रमाणित करती हूँ कि प्रा. पुनिरा मुल्ला ने मेरे निर्देशन में शरद जोशी के साहित्य में अभिव्यक्त व्यंग्य यह लघु शोध-प्रबन्ध एम्.फिल्. उपाधि के लिए लिखा है । यह उनकी मौलिक रचना है । यह लघु शोध-प्रबन्ध पूर्ण योजना के अनुसार लिखा गया है । जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबन्ध में प्रस्तुत किये गये हैं, मेरी जानकारी के अनुसार वे सही हैं । मैं सम्पूर्ण शोध-प्रबन्ध के आधोपान्त पढकर ही यह प्रमाणपत्र दे रही हूँ । मैं यह भी प्रमाणित करती हूँ कि यह लघु शोध-प्रबन्ध इसके पूर्व किसी भी विश्वविद्यालय में किसी भी उपाधि के हेतु प्रस्तुत नहीं किया गया ।

M. P. Khadilkar
(डा.मीना खाडिलकर)

सांगली :
दिनांक २४:१२:१९९३ ।

अनुक्रमणिका

		पृष्ठ क्रमांक
	- प्राक्कथन	i ---- IV
प्रथम अध्याय	- शरद जोशी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व ।	1 ----- 13
द्वितीय अध्याय	- हिन्दी में व्यंग्य साहित्य का स्वरूप, परम्परा और महत्व ।	14 ---- 36
तृतीय अध्याय	- शरद जोशी के साहित्य का संक्षिप्त परिचय ।	37 ----49
चतुर्थ अध्याय	- शरद जोशी के साहित्य में वर्णित विभिन्न समस्याएँ ।	50---- 87
पंचम अध्याय	- शरद जोशी के व्यंग्य लेखन की सामयिकता ।	88 ---- 94
	उपसंहार	95 ---- 101
	संदर्भ ग्रंथ सूची ।	102 ---- 103

प्राक्कथन

स्वर्गीय शरद जोशी आधुनिक हिन्दी व्यंग्य-साहित्य के एक सफल और अप्रतिम व्यंग्यकार रहे हैं। प्रारम्भ से ही शरद जोशी का पत्रकारिता के साथ अभिन्न सम्बन्ध होने के कारण उन्होंने व्यंग्य लिखने के लिए निबंध विधा का ही प्रमुख रूप से आधार लिया है। एक दो नाटक और कुछ कहानियाँ भी उन्होंने लिखी हैं, पर उनका बाकी का सम्पूर्ण व्यंग्य-साहित्य निबंध के रूप में ही मिलता है। स्वातंत्र्योत्तर कालखण्ड में व्यंग्य की एक विशेष धारा प्रवाहित हुयी और कुछ आगे चलकर व्यंग्य ने अपना एक अलग व्यक्तित्व प्राप्त कर लिया, इस कार्य में सबसे बडा योगदान हरिशंकर परसाई के अनंतर शरद जोशी का रहा है।

प्राध्यापिका होने के नाते मुझे हरिशंकर परसाईजी के कुछ निबंधों को पढने और पढाने का मौका उपलब्ध हुआ। शायद तब से मैं व्यंग्य-लेखन की ओर विशेष रुप से आकर्षित हुई। यही आकर्षण रुचि में बदलता गया। लघु शोध-प्रबन्ध के लिए विषय के बारे में जब मैं सोच रही थी कि इसी बीच शरद जोशी का निधन हो गया और उनके लेखन के बारे में बहुत कुछ धर्म-युग तथा नवभारत टाइम्स में पढने को मिला। परिणाम स्वरुप इनकी रचनाओं के बारे में अधिक जानने की इच्छा निर्माण हो गई और मैंने लघु शोध-प्रबन्ध के विषय के रुप में शरद जोशी के व्यंग्यात्मक साहित्य को चुन लिया। डॉ.प्रा.मीना खाडिलकर के निर्देशन में शरद जोशी के व्यंग्यात्मक साहित्य के सन्दर्भ में अधिक गहराई से जानने की मेरी इच्छा साकार हो गई।

व्यंग्य को उसकी समसामयिकता, प्रहारक शक्ति और निहित जनवादी दृष्टिकोण के कारण प्रगतिशील साहित्य माना जा सकता है। व्यंग्यकार की कलम जान-बूझकर उन्हीं स्थितियों पर उठती है जिनके केन्द्र में पीडा, शोषण, विकृति और अनाचार है। जो बात हम खुलकर कह नहीं सकते वह बात एक व्यंग्य

रचनाकार सहज रुप में कह पाता है । व्यंग्यकार जब व्यंग्य रचता है तो उसके पाठक दो प्रकार के होते है । एक तो वे पाठक जिसे लक्ष्य कर व्यंग्य लिखा गया है ,दूसरे वे जो खुद विसंगतियों का शिकार हैं । जिसे लक्ष्य कर लिखा गया है उसे तो उसकी मर्मग्राही चोट जरुर पहुँचती है किन्तु अन्य पाठक भी व्यंग्य रचना का आनंद पाता है , क्योंकि वे लोग अपने मन के आक्रोश को चाह कर भी व्यक्त कर नहीं सकते ,उनमें उतना सामर्थ्य नहीं होता, जब वे यह सामर्थ्य व्यंग्यकार में देखते हैं तो उन्हें लगता है कोई तो है जो इन पाखण्डियों को बेनकाब करने का साहस दिखाता है । इसलिए वे पाठक लेखक को धन्यवाद देते हुए व्यंग्य रचना की सराहना भी करते हैं । यही वजह है कि वर्तमान युग में व्यंग्य विधा अत्यन्त लोकप्रिय है ।

शरद जोशी समाचारपत्र नवभारत टाइम्स के स्तम्भ के रुप में काम करते थे, इसलिए उनके लेखन में सामयिक समस्याओं का भी जिक्र पाया जाता है । इसलिए मैं ने लघु शोध-प्रबन्ध में एक ओर शरद जोशी के व्यंग्य साहित्य में समस्याएँ तो दूसरी ओर समसामयिकता का भी विचार किया है ।

लघु शोध-प्रबन्ध को अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है ।

प्रथम अध्याय --

इस अध्याय में शरद जोशी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अनुशीलन किया गया है । प्रस्तुत कार्य को प्रारम्भ करते समय स्व.शरद जोशी के व्यक्तित्व और कृतित्व के सम्बन्ध में प्रकाशित रुप में अधिक महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध नहीं हुई । धर्मयुग से जो मदद मिली है उसका निर्देशन यथास्थान किया गया है ।

द्वितीय अध्याय -

द्वितीय अध्याय में व्यंग्य के स्वरुप विश्लेषण पर विचार किया गया है । हिन्दी साहित्य में व्यंग्य की परम्परा पर संक्षेप में प्रकाश डालते हुए व्यंग्य के महत्व को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है ।

तृतीय अध्याय -

शरद जोशी जी की प्रकाशित कुल पच्चीस रचनाएँ हैं, जिनमें से केवल पाँच ही रचनाएँ उपलब्ध हो सकी हैं। इन्हीं पाँच रचनाओं का संक्षिप्त परिचय इस अध्याय में देने का प्रयास किया गया है।

चतुर्थ अध्याय -

जीवन के सभी क्षेत्रों में व्याप्त विभिन्न समस्याओं पर जोशी जी ने व्यंग्यात्मक प्रहार किया है। इन विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा साहित्यिक समस्याओं का निर्देशन इस अध्याय में किया गया है।

पंचम अध्याय -

सफल पत्रकार के नाते शरद जोशी ने जिन सामयिक विषयों पर अपनी लेखनी चलाकर गहरी चोट की है उसका वर्णन इस अध्याय में किया गया है।

उपसंहार में अध्ययन के उपरान्त निकले निष्कर्ष और मूल्यांकन को सार रुप में प्रस्तुत किया गया है।

अन्त में सहायक ग्रन्थों की सूची जोड दी है जो शोध-प्रबन्ध की निर्मिति में विशेष सहायक रही हैं।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध डॉ.मीना खाडिलकर जी के कृपापूर्ण निदेशन में लिखा गया है। यह बात मेरे लिए विशेष गौरव की है। अपनी व्यस्तताओं के बावजूद भी सतत प्रेरणा और प्रोत्साहन देकर आपने मेरी सहायता की है। आपके बार-बार सजग करने से यह शोध-प्रबन्ध पूरा हो पाया है। आभार-प्रदर्शन की औपचारिकता को निभाकर मैं आपके ऋण से मुक्त होना नहीं चाहती, क्योंकि आपसे हमेशा प्रेरणा तथा कृपायुक्त स्नेहभाव पाना चाहती हूँ। फिर भी

आपके कृपापूर्ण दिग्दर्शन के लिए मैं अतीव कृतज्ञ हूँ ।

वालचंद इन्जि.कॉलेज के ग्रंथपाल डॉ.एस.ए.एन.ईनामदार जी मेरे पथ प्रदर्शक रहे हैं । जिनका सक्रीय योगदान मेरे इस शोध कार्य में महत्त्वपूर्ण रहा है । डॉ.के.पी.शाह जी भी मेरे पथ प्रदर्शक रहे हैं । इन सब के प्रति मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ । साथ ही शिवाजी विश्वविद्यालय तथा श्रीमती सी.बी. शाह महिला महाविद्यालय के ग्रंथपाल एवं सभी कर्मचारियों का मुझे सामग्री उपलब्ध करा देने में बहुत बडा हाथ रहा है । इन्हें धन्यवाद देते हुए मैं आभार व्यक्त करती हूँ । इस शोध-प्रबन्ध को मूर्त रुप देने का कार्य श्रीयुत बालकृष्ण आर.सावंत,जी ने किया है,उनके प्रति भी आभारी हूँ । प्रस्तुत शोध - प्रबन्ध को पूर्ण करने में मुझे जहाँ कहीं से भी प्रेरणा ,प्रोत्साहन एवं सहयोग प्राप्त हुआ है,उन सभी के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता एवं सहयोग प्राप्त हुआ है,उन सभी के प्रति मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता तथा आभार व्यक्त करती हूँ । भविष्य में भी इन सभी लोगों से आशीर्वाद तथा सहयोग की कामना करते हुए मैं अपना यह लघु शोध प्रबन्ध अवलोकन के लिए समीक्षकों के सामने रखती हूँ ।

(प्रा.मुनिरा युसूफ मुल्ला ।)
शोध-छात्रा ।

सांगली ।
डिसेंबर 22:१२:१९९३ ।